



"क्या भूलूँ क्या याद करूँ में बोलता कवि हृदय"

- चावड़ा संजय करमणभाई (M.Phil. NET)

शोध छात्र, सौराष्ट्र विश्वविद्यालय - राजकोट, गुजरात

* प्रपत्र में प्रयुक्त दृष्टिकोण एवं सारांश : -

'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' के अंतर्गत कई काव्य पंक्तियाँ हैं। इन काव्य पंक्तियों की योजना क्यों हुई? इन पद्यों को आत्मकथा में क्यों स्थान दिया गया? और इन काव्य पंक्तियों के पीछे की मानसिक स्थिति क्या है? इन्हीं प्रश्नों का समाधान करने का इस प्रपत्र में छोटा सा प्रयास किया गया है।

"क्या भूलूँ क्या याद करूँ में बोलता कवि हृदय" - चावड़ा संजय करमणभाई

भारत में आत्मकथा लेखन की परंपरा बहुत कम है। भारतीय परंपरा में व्यक्तिगत बातों को लिखना अनुचित माना जाता रहा है। इसलिए कई प्राचीन रचनाकारों का जीवनवृत्त नहीं मिलता। उनके जीवन के विषय में केवल किंवदंतियों से ही अनुमान लगाया जाता है। हिन्दी साहित्य में आधुनिक युग के अभ्युदय के साथ कई नई विधाओं का भी प्रस्फुटन हुआ। उनमें से एक है आत्मकथा।

जब हम साहित्यिक रचना का विश्लेषण करते हैं, तो रचना के साथ-साथ रचनाकार के जीवन का विश्लेषण भी अपरिहार्य है। क्योंकि कोई भी रचनाकार अपने युग, समाज और परिस्थितियों से प्रभावित हुए बिना नहीं लिख सकता। इस तथ्य को महादेवी वर्मा 'पथ के साथी' की भूमिका में समझाती हुई कहती हैं - "साहित्यकार की साहित्य-सृष्टि का मूल्यांकन तो अनेक आगत-अनागत युगों में हो सकता है; परन्तु उसके जीवन की कसौटी उसका अपना युग ही रहेगा। देश-काल की सीमा में आबद्ध जीवन न इतना असंग होता है कि अपने परिवेश और परिवेशियों से उसका कोई संघर्ष न हो और न यह संघर्ष इतना तरल होता है कि उसके आघातों के चिह्न शेष न रहें।"1

आत्मकथा लेखन क्षेत्र में 'बच्चन' जी की आत्मकथाएँ मील का पत्थर मानी जाती हैं। 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' 'बच्चन' जी की आत्मकथा का प्रथम खण्ड है। इस खण्ड में उन्होंने श्यामा जी की मृत्यु तक के अपने जीवन का ज्यों-का-त्यों ब्योरा दिया है। 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' में प्रारंभ से लेकर अंत तक 'बच्चन' जी ने कई पद्यों को स्थान दिया है, क्योंकि वे मूलतः कवि हृदयी व्यक्ति थे। 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' के अंतर्गत आती काव्य पंक्तियों के पीछे की मानसिक स्थिति को समझने का यहाँ पर छोटा सा प्रयास किया जा रहा है।

'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' में कई पद्य हैं। जिसमें कुछ संस्कृत के श्लोक, कुछ प्रचलित सुक्तियाँ, पहले लिखी जा चुकी हो- ऐसी 'बच्चन' जी कविताओं के कुछ अंश, कुछ प्रसिद्ध गीत, कुछ ऐसी पंक्तियाँ भी हैं जिनका प्रणयन उन्होंने केवल आत्मकथा के लिए ही किया है। 'खालिकबारी', 'आल्हा', 'हनुमान चालीसा', 'सुन्दर काण्ड', 'उर्वशी' आदि के कुछ पद्य तथा बिहारी व कबीर के दोहे, तुलसी की चोपाइयाँ और बोधा के पदों का उल्लेख भी 'बच्चन' जी ने 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' के अंतर्गत किया है।

"सतसङ्गा के दोहरा, ज्यों नावक के तीर। / देखन में छोटे लगे, घाव करे गंभीर ॥"2



उपर्युक्त पंक्तियाँ 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' के पद्यों में अच्छी तरह से चरितार्थ हुई है। इस आत्मकथा के पद्य, और खास करके अंत भाग के पद्य अत्यंत छोटे होते हुए भी गंभीर घाव करते हैं। 'बच्चन' जी ने कई वर्ष-विषाद के प्रसंगों पर पद्यों के माध्यम से पाठकों के सामने अपना हृदय खोलकर रख दिया है।

" वियोगी होगा पहला कवि, आह से उपजा होगा गान,
उमड़ कर आँखों से चुपचाप, बही होगी कविता अनजान ।"3

ठीक इस तरह 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' में भी 'बच्चन' जी की आह से कई कविताएँ उपजी हैं, और इस आह के घाव इतने गहरे हैं कि हमें भी गहरी चोट पहुँचाते हैं। यह बात तो सत्य है कि पद्य की अपेक्षा गद्य अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। परन्तु कुछ बातें, कुछ भाव या कुछ प्रसंग ऐसे होते हैं, जो पाँच पृष्ठों के गद्य की अपेक्षा पाँच पंक्तियों के पद्य में अधिक सशक्त ढंग से मुखरित होते हैं। 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' के पद्यों ने यही काम किया है।

बचपन में 'बच्चन' जी ने अपने परदादा की वीरता के कई किस्से सुने थे। 'बच्चन' जी के बाल मानस पर इन किस्सों का गहरा असर हुआ। वे अपने परदादा की तरह तलवार चलाना आदि कई कल्पनाएँ करने लगे। उनका स्वप्न परदादा के समान बनना था, परन्तु वे परदादा के स्तर तक नहीं पहुँच पाएँ। 'बच्चन' जी को इस बात का पछतावा भी था कि, जो वह थे वह होकर वे खुश नहीं थे।

" विवश जीविकोपार्जन को मैं / हुआ न किस-किस पथ का राही,
पर मेरा वश चलता तो मैं / होता कवि के साथ सिपाही "4

उपर्युक्त पंक्तियों से जान पड़ता है कि 'बच्चन' जी अपने कवि कर्म से खुश नहीं थे।

'बच्चन' जी अपने बाल सहज भावों को याद करते कहते हैं कि स्कूल में पढ़ती सुखाते समय सभी लड़के एक कतार में खड़े होकर हवा में पढ़ती झूला-झूलाकर गाते -

" सूख-सूख पढ़ती, चंदन गोढ़ती, / राजा आया, महल बनाया,
एक अनोखी रानी लाया / राजा-रानी खड़े झरोखे, / सूरज चमके, पढ़ती सोखे !"5

अपनी क्षेत्रीय परंपरा से पाठकों को अवगत करवाते 'बच्चन' ने बताया है कि बच्चों को जब माता निकलती तो आधी रात को स्त्रियाँ देवी की विशेष पूजा करतीं। साथ ही गोल दायरे में खड़ी होकर ताली बजाकर नाचतीं और गुनगुनातीं कि -

" सेर सवैया मालिका, / झूमर खेलें कालिका !"6

अपने अंतरंग सखा कर्कल की मृत्यु के पश्चात 'बच्चन' जी और चम्पा (कर्कल की पत्नी) दोनों ही बहुत अकेले हो गए थे। 'बच्चन' जी लिखते हैं कि - " सच्चाई तो यह थी कि कर्कल की मृत्यु से मेरा अर्द्धांग ही कटकर मुझसे अलग हो गया था; कदाचित् चम्पा भी अपने लिए ऐसा ही महसूस करती थी; और हम दोनों ही शायद अपने खोये आधे अंगों को खोजने की आतुरता में एक दूसरे से आ जुड़े थे - एक हो गए थे ।"7 कुछ समय बाद सुंदर (चम्पा की सास) की अनुभवी आँखों ने चम्पा के गर्भवती होने का भेद पा लिया और वह चम्पा को लेकर बदरीनाथ की यात्रा पर चली गई। वहाँ चम्पा के शरीर को बहुत कष्ट दिया। उस समय इलाहाबाद बाद की तपन - लू असह्य थी। परन्तु 'बच्चन' जी तपन और चम्पा



के वियोग मध्य दुहरी आग में झुलस रहे थे । 'बच्चन' जी अपनी इस मानसिक स्थिति को बोधा की पंक्तियों के माध्यम से अभिव्यक्त करते हैं -

" उर तै उठि आवे ते फिरै मन की मन ही में सिरैबौ करै,
सहते ही बनै कहते न बनै मन ही मन पीर परैबौ करै !"8

यशपाल क्रांतिकारी थे, और उनकी गिरफ्तारी के बाद उनकी प्रेमिका प्रकाशो (रानी) 'बच्चन' जी के मित्र के घर रहती थीं । एक दिन 'बच्चन' जी भेंट प्रकाशो से होती है । प्रकाशो को देखकर उन्हें कर्कल और चम्पा की याद आ जाती है । उन दोनों को याद करते 'बच्चन' जी लिखते हैं -

"हर सूरत साकी की सूरत / में परिवर्तित हो जाती,
आँखों के आगे हो कुछ भी, / आँखों में है मधुशाला ।"9

उपर्युक्त पंक्तियों से लगता है कि कर्कल और चम्पा की मृत्यु के इतने समय बाद भी 'बच्चन' जी उन्हें भूल नहीं पाएँ ।

श्यामा जी बीमारी के दिनों में अपने पिता के यहाँ रहतीं, क्योंकि 'बच्चन' जी खर्च उठाने में असक्षम थे । घर में बहू के न होने से घर का वातावरण ठीक नहीं था । अचानक ही प्रकाशो कुछ दिन 'बच्चन' जी के घर रहने आती हैं । अकेली माँ को प्रकाशो का साथ मीला, वह घर-गिरिस्ती के कामों में माँ का हाथ-बाँटती । प्रकाशो के आने से घर का वातावरण बदल गया । तब 'बच्चन' जी गुनगुनाते हैं -

" तब इस घर में था तम छाया, / था भय छाया, था भ्रम छाया,
था मातम छाया, गम छाया, / उषा का दीप लिए सिर पर
में आई, करती उजियाला । / मैं मधुशाला की मधुबाला !"10

एक ओर 'बच्चन' जी, श्यामा जी की तबीयत को लेकर परेशान थे, तो दूसरी ओर कई आलोचक 'मधुशाला' का जमकर विरोध कर रहे थे । आलोचकों ने 'बच्चन' जी पर निराशावादी, पलायनी, निष्क्रिय भाग्यवादी, कुमार्गगामी, पथभ्रष्ट आदि कई आरोप लगाएँ । रामवृक्ष शर्मा बेनीपुरी ने तो यहाँ तक कह दिया कि - " अगर 'बच्चन' बिहार में पाँव रक्खेगा तो मैं उसे गोली मार दूँगा ।"11 आलोच्य आत्मकथा में 'बच्चन' जी लिखते हैं कि - " संघर्षों ने मुझे इतना भाव प्रवण (सन्सिटिव) बना दिया था कि इन संकीर्ण कट्टरपंथी और प्रायः इर्ष्या प्रेरित आलोचकों के आरोप भी मुझे प्रत्युत्तर में गीत अथवा कविता लिखने को उकसा जाते थे ।"12 उन्होंने अपने विरोधी आलोचकों को प्रत्यक्ष उत्तर देने के बदले कविताओं का ही सहारा लिया । 'कवि की निराशा', 'कवि का उपहास', 'माँजी', 'लहरों का निमंत्रण' आदि इस समय की ही रचनाएँ हैं । 'लहरों का निमंत्रण' कविता में अपने विरोधी आलोचकों को उत्तर देते हुए वे कहते हैं - " तीर पर कैसे रुकूँ मैं, आज लहरों में निमंत्रण !"

" तुम रोक नहीं सकते मुझको, / यह अपनी कागज़ की नावें / तट पर बाँधो, आगे न बढ़ो,
ये तुम्हें डुबा देंगी गलकर /.....प्रति पल पागल - मेरा परिचय"13



जहाँ एक ओर 'मधुशाला' का विरोध था, वहाँ दूसरी ओर स्वागत भी था। लेकिन 'बच्चन' ने विरोधियों पर न तो प्रत्यक्ष प्रतिक्रिया दी और न तो वहवाहियों इतराएँ। इन भावों को अभिव्यक्त करते वे लिखते हैं -

" करे कोई निन्दा दिन रात / सुयश का पीटे कोई ढोल,
किए कानों को अपने बंध / रही बुलबुल डालों पर बोल / सुरा पी, मधु पी, कर मधु पान । "14

एक बार 'बच्चन' जी कई महिनों तक बीमार रहे। वे मृत्यु से संघर्ष कर रहे थे। उनको लगता था कि अब उनका अंतिम समय आ गया है। तब वे मृत्यु के विषय में सोचते हैं कि उस पार न जाने क्या होगा? कुछ समय बाद श्यामा जी का निधन हो जाता है। 'बच्चन' जी को लगता है कि श्यामा जी उस पार पहले गई तो भी उनकी ('बच्चन' जी की) ही जिज्ञासा शांत करने। 'बच्चन' जी प्रश्न ने प्रश्न किया था कि, क्या होगा उस पार? इस प्रश्न का उत्तर ढूँढने के लिए ही श्यामा जी पहले चली गई।

" उठा करता था मन में प्रश्न / कि जाने क्या होगा उस पार
निवारण करने में संदेह / मज़हबी पोथे थे बेकार,
चले तुम, पुछा, हैं ! किस ओर ? / कहा बस तुमने एक ज़बान,
तुम्हें थी जिसकी खोज-तलाश / उसी का करने अनुसंधान "15

मृत्यु शय्या पर भी श्यामा जी हँसती ही रहीं, उन्होंने हँसने के लिए अपने दर्द को बहुत दबाया। ताकि 'बच्चन' जी यह न सोचे कि उनको (श्यामा जी को) कष्ट हो रहा है। अतः वे अंतिम समय तक हँसती ही रहीं। श्यामा जी की वेदना को 'बच्चन' जी ने इन शब्दों में वाणी दी है -

" मृत्यु शय्या पर पड़े अति / रुग्ण की अंतिम हँसी-सी
यत्न करके खिल रही है / एक लघु कलिका निराली । "16

श्यामा जी की मृत्यु से 'बच्चन' जी को बहुत आघात पहुँचा। वे एकदम टूट गए, उनकी यादों के अंधकार में डूब गए। अपनी पीड़ा को कविताओं में उतारते वे कहते हैं -

" मुँह क्यों आज तम की ओर ? "17

" कालिमा से पूर्ण पथ पर / चल रहा हूँ मैं निरंतर "18

'बच्चन' जी मूलतः कवि थे, और कवि हृदयी व्यक्ति बिना कविता के नहीं रह सकता। 'बच्चन' जी अपने गद्य में भी कवि होने का प्रमाण देते हैं। अतः उनकी आत्मकथा में जगह-जगह कविताओं को स्थान मिला है, पर कविता के आवेश में कहीं पर भी गद्य की उपेक्षा नहीं हुई। ये कविताएँ कहीं पर भी आत्मकथा पर हावी होती नज़र नहीं आती। गद्य यदि कवियों कि कसौटी है तो इस कसौटी में 'बच्चन' जी शत प्रतिशत खरे उतरे हैं। साधारण पाठक के लिए वे कवि के रूप में ही ख्यात रहे हैं, परन्तु उनकी आत्मकथा उन्हें एक सशक्त गद्यकार के रूप में प्रमाणित करने में सक्षम है।

'बच्चन' जी ने अपने जीवन को कविताओं का कथ्य बनाया और अपने जीवन का आख्यान गद्य में भी लिखा। आम बोलचाल की भाषा का कलात्मक प्रयोग जिस तरह से 'बच्चन' जी कर पाए हैं, अन्यत्र दुर्लभ है। सर्वेश्वरदयाल सक्सेना



कहते हैं कि - " नई कविता को भाषा बच्चन से मिली है ।" 19 भाषा द्वारा अभिव्यक्ति तो सभी रचनाओं में होती ही है, पर ऐसी रचना मीलना मुश्किल है जो स्वयं भाषा का भंडार हो - 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' ऐसी ही रचना है ।

कवियों को घुमा-फिरा के बात करने की आदत होती है, परन्तु इस आत्मकथा के पद्य इसमें अपवाद है । आलोच्य आत्मकथा के पद्यों के द्वारा सीधा ही लक्ष्य को साधा गया है । इस आत्मकथा में कहीं पर भी वर्णनात्मक काव्य पंक्तियाँ नहीं हैं । जो भी पंक्तियाँ हैं उसमें 'बच्चन' जी ने अपना मनोमंथन, अपनी आंतरिक अनुभूतियों और पीड़ा को व्यक्त किया है । साथ ही कई जगहों पर ऐसा जान पड़ता है कि 'बच्चन' जी पाठकों के आगे पंक्तियों के माध्यम से स्पष्टीकरण कर रहे हैं ।

आलोच्य आत्मकथा के सभी पद्य प्रसंगों को अधिक स्पष्ट करते हैं । ये पद्य आत्मकथा में कुछ इस तरह से घुल-मील गए हैं कि- पुष्प में सुगंधी, और सुगंधी से पुष्प अधिक मन-मोहक बनता है । ठीक इस तरह इन पदों के मणि-कंचन सुयोग से आत्मकथा अधिक मन-मोहक बन पड़ी है । अगर इन पद्यों के अभाव में 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' की कल्पना की जाए, तो यह आत्मकथा सुंदर पुष्प तो लगती है, पर सुगंधी विहीन । 'बच्चन' जी के पाठकों को हमेशा उस सुगंधी (काव्य पंक्तियों) का अभाव खलता रहता ।

- चावड़ा संजय करमणभाई (M.Phil. NET)

चित्रकूट मार्केट, घर नं.4,
इन्द्रलोक एपार्टमेंट के सामने,
नवयुग विद्यालय रोड,
B/H G.I.D.C. शनाला रोड,
मोरबी, गुजरात
363641
Mobile no. 9879910520

संदर्भ सूची

- 1 - पथ के साथी - महादेवी वर्मा, पृष्ठ.3, आठवाँ संस्करण - 1989, भारती भंडार प्रकाशन - इलाहाबाद
- 2 - हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास - बाबू गुलाबराय, पृष्ठ.85, पैंतालीसवाँ संस्करण - 1998, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल प्रकाशन - आगरा
- 3- उपरिवत् पृष्ठ.225
- 4- क्या भूलूँ क्या याद करूँ - हरिवंशराय 'बच्चन', पृष्ठ.36, संस्करण - 2013, राजपाल एण्ड सन्ज़ प्रकाशन, दिल्ली
- 5 - उपरिवत् पृष्ठ.126
- 6 - उपरिवत् पृष्ठ. 152
- 7 - उपरिवत् पृष्ठ. 161
- 8 - उपरिवत् पृष्ठ. 162
- 9 - उपरिवत् पृष्ठ. 210
- 10 - उपरिवत् पृष्ठ. 214
- 11 - उपरिवत् पृष्ठ. 230
- 12 - उपरिवत् पृष्ठ. 239



साहित्य संहिता

Available at <http://sahityasamhita.org/>

ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 11
December 2015

- 13 - उपरिवत् पृष्ठ. 231
- 14 - उपरिवत् पृष्ठ. 230-231
- 15 - उपरिवत् पृष्ठ. 236
- 16 - उपरिवत् पृष्ठ. 237
- 17 - उपरिवत् पृष्ठ. 240
- 18 - उपरिवत् पृष्ठ. 240
- 19 - सर्वेश्वरदयाल सक्सेना ग्रंथावली भाग - 7, संपादक वीरेन्द्र जैन, पृष्ठ.34, संस्करण - 2004, वाणी प्रकाशन, दिल्ली